Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

प्राचीन भारत (भाग-2)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: CSHS02

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

प्राचीन भारत (भाग–2)

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : **1800-121-6260**
Web: www.drishtiias.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिए निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

UPSC DLP

विषय सूची (Contents)

10.	मौर्योत्तर काल	5–27
11.	गुप्तकाल	28–53
12.	गुप्तोत्तर काल : 550-750 ई.	54–79
13.	दक्षिण भारत का इतिहास	80–94
14.	प्रारंभिक भारतीय संस्कृति के प्रतिपाद्य	95–116

अध्याय
10

मौर्योत्तर काल
(Post-Mauryan Period)

10.1 अंधकार युग की संकल्पना	10.7 सातवाहन वंश
10.2 पुष्यमित्र शुंग	10.8 मौर्योत्तरकालीन राजनीतिक व्यवस्था
10.3 कलिंग का शासक खारवेल	10.9 मौर्योत्तरकालीन अर्थव्यवस्था (200 ई.पू.-300 ई.)
10.4 हिंद-यूनानी	10.10 व्यापार एवं वाणिज्य
10.5 शक एवं पह्लव	10.11 मौर्योत्तरकालीन समाज
10.6 कनिष्क	10.12 मौर्योत्तरकालीन धर्म

मौर्यवंश के पतन और गुप्तवंश के उत्थान के बीच जो पाँच शताब्दियाँ बीतीं उनमें बहुत राजनीतिक उथल-पुथल हुई। मध्य एशिया तथा पश्चिमी एशिया और साथ ही चीन एवं कुछ हद तक दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ संपर्कों के कारण भारत और बाहरी दुनिया के बीच संबंधों को बढ़ावा मिला, जिससे भारतीय संस्कृति में ऐसे तत्त्वों का प्रवेश हुआ जिन्होंने उसमें नए आयाम जोड़े और उसे अनेक प्रकार से समृद्धि प्रदान की।

मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् भारत की राजनीतिक एकता नष्ट हो गई और अनेक छोटे-छोटे राज्य अस्तित्व में आए। इसी नई व्यवस्था ने विदेशी आक्रमणकारियों को प्रोत्साहित किया तथा प्रशासनिक व्यवस्था में आमूल परिवर्तन को आवश्यक बना दिया। फलस्वरूप तत्कालीन सामाजिक एवं धार्मिक जीवन, कला, धर्म और साहित्य भी इन परिवर्तनों से अछूता नहीं रहा।

मौर्यकाल में मगध राजनीतिक सत्ता का मुख्य केंद्र था, किंतु मौर्यों के ह्रास के पश्चात् मगध की महत्ता भी क्षीण हुई। कई क्षेत्रीय वंश स्थापित हुए और सत्ता का मुख्य केंद्र गंगा की घाटी में आ गया और यहाँ 185 ई.पू. में शुंग वंश की स्थापना हुई। तत्पश्चात् कण्व वंश ने सत्ता सँभाली और वे 28 ई.पू. तक राज्य करते रहे। इस समय तक उपमहाद्वीप के अनेक क्षेत्र स्वशासन तथा स्वतंत्रता प्राप्त कर चुके थे। प्रथम शताब्दी ई.पू. में राजा खारवेल के समय कलिंग का उत्कर्ष होता है। दूसरी तरफ प्रायद्वीपीय भारत में सातवाहनों ने प्रथम शताब्दी ई.पू. में सत्ता सँभाली एवं अगले 300 वर्षों तक शासन करते रहे।

इसी काल में विदेशी आक्रमणकारियों के रूप में इंडो-ग्रीक, शक, कुषाण, पर्थियन आदि भारत में आए और अपने राज्य का निर्माण किया।

10.1 अंधकार युग की संकल्पना *(Conception of Dark Age)*

भारतीय इतिहास के कई कालक्रम को कभी स्वर्ण-युग तो कभी अंधकार युग के रूप में चित्रित किया जाता रहा है। इसी कड़ी में वी.ए. स्मिथ व के.पी. जायसवाल जैसे विद्वान मौर्योत्तर काल (200 ई.पू. से 300 ई.) को अंधकार युग मानते हैं। इस काल को अंधकार युग मानने के पीछे दो कारण दिये जाते हैं:-

पक्ष में तर्क

1. यह काल राजनीतिक दृष्टि से अवनति का काल था। इस काल में राजनीतिक एकीकरण की बजाय राजनीतिक विखंडन देखने को मिलता है। वस्तुतः यह काल दो बड़े साम्राज्य अर्थात् मौर्य एवं गुप्त साम्राज्य के बीच का काल था तथा इस काल में मौर्य साम्राज्य सरीखे एकीकृत राज्य की बजाय बहुपक्षीय राज्य देखने को मिलता है। उदाहरण स्वरूप मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद उत्तर भारत में शुंग व कण्व तथा उत्तर-पश्चिमी भारत में यवन, शक, पहलव तथा कुषाणों का शासन क्रमिक रूप से स्थापित होता है। वहीं दक्षिण में सातवाहन, चेदि, चोल, चेर व पाण्ड्य राज्य अस्तित्व में आते हैं।
2. इस काल को राजनीतिक अवनति के साथ-साथ धार्मिक एवं सांस्कृतिक अवनति का काल भी कहा गया। ऐसा माना गया कि इस समय जो विदेशी तत्त्व आए, उन्होंने भारतीय धर्म व संस्कृति को दूषित किया। इसके प्रमाण में पुराणों का

कला पर धर्म का प्रभाव

- इस काल के धर्मों का स्पष्ट प्रभाव स्थापत्य कला, मूर्तिकला, चित्रकला में दिखाई पड़ता है। स्थापत्य कला के अंतर्गत स्तूप, चैत्य एवं गुफा, विहार के निर्माण में बौद्ध-जैन धर्मों की भूमिका प्रभावी रही। कनिष्क ने यहाँ पेशावर में स्तूप का निर्माण करवाया तो सातवाहनों ने जुन्नार, कार्ले आदि स्थानों में स्तूप एवं चैत्य का निर्माण कराया।
- मूर्तिकला की नवीन शैलियों यथा गांधार, मथुरा, अमरावती पर धर्म का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। इस काल में बौद्ध-जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ बनीं।
- गांधार कला के अंतर्गत बुद्ध की मूर्ति की मुखाकृति यूनानी देवता **अपोलो** के समान बनाई जाने लगी।
- अजंता की गुफा में निर्मित चित्रों द्वारा चित्रकला पर भी बौद्ध धर्म का प्रभाव देखा जा सकता है।

साहित्य पर धर्म का प्रभाव

भारतीय समाज में ब्राह्मणीय विचारधारा के सबसे अधिक प्रभावशाली उपकरण का काम करने वाली 'मनुस्मृति' की रचना इसी काल में हुई। ब्राह्मणों ने रामायण, महाभारत तथा पुराणों का संशोधन परिवर्धन आरंभ किया। बुद्ध के जीवन-चरित को आधार बनाकर अश्वघोष ने बुद्धचरित तथा सौदंरानंद की रचना की।

व्यापार पर धर्म का प्रभाव

बौद्ध एवं जैन मत व्यापारियों को प्रोत्साहन तथा बड़ी संख्या में व्यावसायिक समूहों को संरक्षण प्रदान करता है। बौद्ध मठों एवं विहारों को प्रचुर मात्रा में धन संपत्ति दान में मिलने लगी। इससे व्यापारिक गतिविधियों को और भी बढ़ावा मिला। बुद्ध की मूर्ति-पूजा आरंभ होने से बौद्ध मत के कर्मकांडों में बढ़ोतरी हुई। अब मठों को दीप जलाने के लिये तेल, सुगंध के लिये लोबान तथा स्तूप सजाने के लिये सिल्क की पट्टियों की आवश्यकता हुई। इस प्रकार वे इस युग में व्यापार की जाने वाली कई वस्तुओं के प्रमुख उपभोक्ता बन गए।

ब्राह्मण धर्म से संबंधित देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ तो इस काल में बनने लगी थीं, किंतु ब्राह्मणिक मंदिरों की संरचना एवं स्वरूप का विकास मुख्यतः गुप्तकाल से आरंभ होता है तथा समाज की विभिन्न गतिविधियों के केंद्र के रूप में मंदिर इस युग के बाद उभरे।

शासक वर्गों पर धर्म का प्रभाव

नए धर्मों के विकास (जैसे-शैव, भागवत, बौद्ध, जैन) और उनके अपेक्षाकृत कम रूढ़िवादी स्वरूप ने विदेशी शासकों को अपनी ओर आकर्षित किया। अनेक शासक इन धर्मों के अनुयायी बने। कनिष्क ने बौद्ध धर्म को अपनाया, तो विम कडफिसस ने शैव तथा खारवेल ने जैन धर्म को प्रश्रय दिया।

ब्राह्मण धर्म ने विदेशी शासकों को निम्न स्तर के क्षत्रिय (व्रात्य क्षत्रिय) का दर्जा देकर भारतीय समाज में उनके आत्मसातीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इसने गुप्तकालीन धर्म के विकास की पृष्ठभूमि के निर्माण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

संगमकालीन समाज एवं अर्थव्यवस्था

दक्षिण भारत के इतिहास के समग्र अध्ययन के क्रम में इसे पढ़ा जाएगा।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. तीसरी सदी ई.पू. से पाँचवी सदी ई. तक का भारतीय इतिहास का कालखंड नवप्रवर्तन और अन्योन्यक्रिया का काल था। इस पर आप क्या प्रतिक्रिया देंगे? **UPSC (Mains) 2017**
2. कुषाणों एवं सातवाहनों के आर्थिक एवं राजनीतिक दृष्टिकोण को समकालीन मौद्रिक साक्ष्य किस प्रकार प्रतिबिंबित करते हैं? **UPSC (Mains) 2016**

3. "कुषाणकाल से पूर्व मध्यकाल तक कला क्षेत्र में हुए परिवर्तन केवल परिवर्तनशील दृष्टिकोण के प्रतिबिंब हैं।" टिप्पणी कीजिये। **UPSC (Mains) 2016**
4. प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में श्रेणियों एवं व्यापारिक संगठनों की भूमिका की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिये। **UPSC (Mains) 2015**
5. दूसरी शताब्दी ई.पू. से तीसरी शताब्दी ई. के मध्य भारतीय उपमहाद्वीप में विभिन्न कला-शैलियों के विकास का आलोचनात्मक पुनरीक्षण कीजिये तथा इनके विकास के लिये उत्तरदायी सामाजिक एवं धार्मिक कारणों का मूल्यांकन कीजिये। **UPSC (Mains) 2014**
6. मौर्योत्तर काल के पाँच शताब्दियों को भारतीय इतिहास के 'अंधकार-युग' के रूप में चित्रित करने में हम कितने न्यायसंगत हैं? अपने उत्तर के समर्थन में कारण प्रस्तुत कीजिये।
7. मौर्योत्तरकाल आर्थिक गतिविधियों की दृष्टि से भारत का स्वर्ण युग था। टिप्पणी कीजिये।
8. भारतीय इतिहास व संस्कृति के क्षेत्र में कनिष्क का योगदान उल्लेखनीय है। टिप्पणी कीजिये।
9. कलिंग शासक खारवेल की विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियों का वर्णन कीजिये।
10. विखंडीकरण तथा विकेंद्रीकरण मौर्योत्तरकालीन राजनीतिक व्यवस्था की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ थीं। समीक्षा कीजिये।
11. मौर्योत्तर युग में बौद्ध धर्म में आए परिवर्तनों को रेखांकित कीजिये।
12. प्लिनी के इस कथन की व्याख्या कीजिये कि "भारत-रोम व्यापार रोम से भारत की ओर धन निर्गमन का माध्यम बनता जा रहा है।"
13. मौर्योत्तरकाल में श्रेणियों की व्यापार-वाणिज्य के विकास में भूमिका की समीक्षा कीजिये।
14. मौर्योत्तरकालीन धर्म की नवीन प्रवृत्तियों को रेखांकित कीजिये। इनका कला तथा साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ा?
15. मौर्योत्तरकाल में वाणिज्य-व्यापार को बढ़ावा देने वाले कारकों की विवेचना कीजिये।
16. प्लिनी के इस कथन का औचित्य निर्धारित कीजिये कि 'रोम के स्वर्ण का भारत द्वारा बर्हिगमन ईसा की प्रथम शताब्दी में किया जा रहा था।'
17. व्याख्या कीजिये कि कैसे प्रारंभिक स्तूप कला ने लोक अभिप्राय, कथाओं तथा सामान्य सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रयोग करते हुए इन विषयों को बौद्ध आदर्शों में परिवर्तित करने में सफलता प्राप्त की।

अध्याय
11

गुप्तकाल
(The Gupta Period)

11.1 गुप्तों की उत्पत्ति एवं मूल निवास स्थान	11.9 गुप्तकालीन समाज
11.2 एक शक्ति के रूप में गुप्तों का उद्भव	11.10 गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था
11.3 समुद्रगुप्त	11.11 द्वितीय नगरीकरण के पतन के संदर्भ में विभिन्न दृष्टिकोण
11.4 रामगुप्त की ऐतिहासिकता	11.12 गुप्तकाल की मौद्रिक अर्थव्यवस्था
11.5 चंद्रगुप्त द्वितीय	11.13 गुप्तकालीन धर्म
11.6 स्कंदगुप्त	11.14 गुप्तकाल में भाषा एवं साहित्य
11.7 गुप्त साम्राज्य का पतन	11.15 गुप्तकाल : स्वर्णयुग-काल्पनिक या वास्तविक
11.8 गुप्तों की प्रशासनिक व्यवस्था	11.16 फाह्यान का विवरण

तीसरी सदी में उत्तर भारत में कुषाणों तथा दक्कन में सातवाहनों के प्रभुत्व के अवसान के साथ देश में राजनीतिक विघटन का दौर आरंभ हुआ और अनेक छोटी-छोटी शक्तियों और नए शासक घरानों के उदय का मार्ग प्रशस्त हुआ। इसी पृष्ठभूमि में गुप्तों ने एक साम्राज्य की नींव डाली। उनकी उत्पत्ति और मूल स्थान का निर्धारण निश्चयपूर्वक नहीं किया जा सकता लेकिन यह संभव प्रतीत होता है कि उन्होंने शुरुआत उत्तर कुषाणों की किसी शाखा के मातहतों के रूप में की और चौथी सदी के दूसरे दशक में मगध क्षेत्र पर अपना राजनीतिक नियंत्रण स्थापित कर लिया।

गुप्तकाल के इतिहास की जानकारी के लिये साहित्यिक स्रोत के रूप में पुराण, स्मृतियाँ, बौद्ध ग्रंथ, मंजूश्री मूलकल्प, जैन ग्रंथ परिशिष्ट पर्वन, हरिवंश पुराण, विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस और कालिदास की रचनाएँ प्रमुख हैं। पुरातात्त्विक स्रोत के रूप में समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति, चंद्रगुप्त का महरौली स्तंभ लेख, विभिन्न मुद्राएँ, स्मारक, फाह्यान के विवरण आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

11.1 गुप्तों की उत्पत्ति एवं मूल निवास स्थान
(Origin and Native Habitat of the Guptas)

मौर्यों की उत्पत्ति के ही समान गुप्तों की उत्पत्ति (जाति) एवं उनके मूल निवास का प्रश्न काफी विवादास्पद रहा है। यदि हम इस समस्या को भौगोलिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक दृष्टिकोण से समझने का प्रयत्न करें तो संभव है कि हम इस समस्या का गुप्त वंश के इतिहास के साथ अधिक महत्त्वपूर्ण एवं अर्थपूर्ण ढंग से समाकलन कर सकें।

कौमुदी महोत्सव नाटक के अनुसार गुप्त निम्न जाति के थे क्योंकि गुप्तों का वैवाहिक संबंध लिच्छवियों के साथ हुआ था और लिच्छवी म्लेच्छ थे। किंतु यह मत तार्किक नहीं है क्योंकि लिच्छवियों को म्लेच्छ मानने का कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है। दीर्घ निकाय के अनुसार, लिच्छवी क्षत्रिय थे और गुप्त भी विवाहोपरांत क्षत्रिय हो गए।

कुछ विद्वानों ने गुप्तों को वैश्य वर्ण का माना है। इस संदर्भ में दिये गए प्रमाण भी संदिग्ध हैं-

- प्रभावती गुप्त के पूना एवं रिद्धपुर अभिलेख के आधार पर गुप्तों को धारण गोत्र का ब्राह्मण कहा गया है। कदंब नामक ब्राह्मण राजा ने अपनी एक पुत्री का विवाह गुप्तवंशी राजा से किया था।
- भौगोलिक दृष्टि से गुप्त मूलतः ब्राह्मणवाद से प्रभावित ऊपरी गंगा बेसिन के निवासी थे। गुप्तकाल की सामाजिक प्रवृत्तियों से भी यह विदित् होता है कि वहाँ के राजनीतिक क्षेत्र में ब्राह्मणों का प्रभुत्व था। इन तथ्यों से प्रतीत होता है कि गुप्त ब्राह्मणवंशीय रहे होंगे। वस्तुतः गुप्तों ने अपने अभिलेख में जाति का वर्णन नहीं किया है। विद्वानों ने अपनी-अपनी मान्यताओं के आधार पर गुप्तों को चारों वर्णों से संबद्ध माना है।

अध्याय
12

गुप्तोत्तर काल : 550-750 ई.
(Post Gupta Period : 550-750 A.D.)

12.1 मौखरि वंश
12.2 हर्षवर्धन
12.3 ह्वेनसांग का भारत वर्णन
12.4 ह्वेनसांग तथा फाह्यान के भारत विवरण की तुलना
12.5 गुप्तोत्तरकालीन समाज
12.6 गुप्तोत्तरकालीन धर्म
12.7 गुप्तोत्तरकालीन राजनीतिक व्यवस्था की संरचना
12.8 गुप्तोत्तरकालीन अर्थव्यवस्था
12.9 प्राचीन भारत में शिक्षा एवं शैक्षणिक केंद्र
12.10 प्राचीन भारत में सूद प्रथा

12.1 मौखरि वंश *(Maukhari Dynasty)*

गुप्त साम्राज्य के पतनोपरांत उत्तर भारत की राजनीति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली अनेक शक्तियों में मौखरियों का स्थान प्रमुख था। छठवीं शताब्दी में मौखरियों ने गुप्तों की कमज़ोरी का लाभ उठाकर एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की और अपनी शक्ति का केंद्र कन्नौज को बनाया। इसी के साथ पाटलिपुत्र के स्थान पर कन्नौज उत्तर भारत की राजनीति का केंद्र बन गया और आगे कन्नौज पर अधिकार को लेकर पाल, प्रतिहार एवं राष्ट्रकूट के बीच संघर्ष छिड़ा। वस्तुतः मौखरियों के राज्य स्थापना के बाद समकालीन शक्तियों से संबंध बने। उत्तर गुप्तों के साथ जहाँ इनका संबंध मैत्री और संघर्ष का था वहीं वर्धन वंश के साथ मैत्री का, लेकिन आगे मौखरियों की सत्ता वर्धन वंश के पास (हाथों) चली गई।

इसी बिंदु पर यह जानना आवश्यक हो जाता है कि मौखरि कौन थे और उनकी शक्ति का उत्कर्ष कैसे हुआ? समकालीन शक्तियों के साथ उनके संबंध कैसे रहे?

जानकारी के स्रोत

मौखरियों के इतिहास पर साहित्यिक एवं पुरातात्त्विक साक्ष्यों से पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। बाणभट्ट के 'हर्षचरित' से वर्धन-मौखरि संबंध का पता चलता है। हरहा लेख, बराबर तथा नागार्जुनी लेख, असीरगढ़ मुद्रालेख तथा भिटौरा (उत्तर प्रदेश) से प्राप्त मुद्राओं से मौखरियों के इतिहास का पुनर्निर्माण होता है।

मौखरि या मुखर वंश अत्यंत प्राचीन प्रतीत होता है। पतंजलि के महाभाष्य में मौखरि का उल्लेख एक गोत्र के रूप में हुआ है। पाणिनी ने भी उनका उल्लेख किया है। हरहा अभिलेख के अनुसार मौखरि वैवस्वत के वरदान से अलग अश्वपति के सौ पुत्रों में से एक थे।

मौखरि वंश का संस्थापक 'मुखर' था, उसी के वंशज मौखरि के नाम से विख्यात हुए। इनकी अनेक शाखाएँ थीं, सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शाखा कन्नौज में स्थापित हुई थी।

राजनीतिक इतिहास

कन्नौज के मौखरियों का इतिहास हरिवर्मा के समय से प्रारंभ होता है, जिसने 510 ई. के लगभग अपना शासन प्रारंभ किया था। वह महाराज की उपाधि धारण करता था, जिससे स्पष्ट होता है कि वह गुप्तों का अधीनस्थ था। उसका उत्तराधिकारी आदित्यवर्मा हुआ। इसका विवाह उत्तर गुप्तवंशी राजकुमारी हर्षगुप्ता के साथ हुआ और इसने महाराज की उपाधि ली। इसका पुत्र और उत्तराधिकारी ईशानवर्मन हुआ। इसने भी उत्तर गुप्तवंशी कन्या उपगुप्ता से विवाह किया। इस प्रकार तीसरी पीढ़ी तक मौखरियों एवं उत्तर गुप्तों के संबंध मैत्रीपूर्ण रहे। वैवाहिक संबंधों के ज़रिये इनकी शक्ति और प्रतिष्ठा विस्तृत हुई। यद्यपि दोनों राजवंश अपनी-अपनी शक्ति का विस्तार करने में लगे हुए थे तथापि दोनों ने एक-दूसरे के महत्त्व को समझा था। तीन पीढ़ियों तक दोनों राजवंश सामंत की स्थिति में थे, जो उनकी उपाधियों से स्पष्ट होता है।

अध्याय
13

दक्षिण भारत का इतिहास (History of South India)

13.1 संगम युग
13.2 चालुक्य और पल्लव
13.3 राष्ट्रकूट

सामान्यत: विंध्य पर्वत से लेकर सुदूर दक्षिण में स्थित कन्याकुमारी तक का विशाल प्रदेश दक्षिण भारत कहा जाता था जिसका आकार त्रिभुज के समान था। इस क्षेत्र में नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा, तुंगभद्रा तथा कावेरी जैसी महत्त्वपूर्ण नदियाँ प्रवाहित होती थीं। प्राचीन काल का दक्षिण भारत दो भागों में विभाजित था–

1. **दक्षिणापथ तथा दक्कन :** इसके अंतर्गत नर्मदा से लेकर दक्षिण में तुंगभद्रा (कर्नाटक) तक का संपूर्ण क्षेत्र सम्मिलित था।
2. **सुदूर दक्षिण:** इस भाग के अंतर्गत तुंगभद्रा नदी के दक्षिण का समस्त भू-भाग सम्मिलित था। इस भाग को द्रविड़ अथवा तमिल देश कहा जाता था। आरंभिक राज्य निर्माण की प्रक्रिया इस क्षेत्र से शुरू हुई और प्राचीन भारत में चोल, चेर, पांड्य जैसे राज्य अस्तित्व में आए जिनके बारे में जानकारी मुख्यत: संगम साहित्य से मिलती है।

दक्षिण भारत में मानव संस्कृति के विकास की रेखा प्राक्-ऐतिहासिक काल से जोड़कर देखी जा सकती है। इस क्षेत्र में पुरापाषाण काल से संबद्ध हस्तकुठार (Hand Axe) संस्कृति का विकास हुआ जिसका पता मुख्यत: अतिरंपक्कम, बदमदुरै आदि स्थानों से मिले पाषाण उपकरणों से चलता है। इस युग का मानव मुख्य रूप से आखेटक था।

दक्षिण में नवपाषाणकालीन प्रमुख स्थल नागार्जुनकोंड, उत्तनूर (आंध्र प्रदेश), पैयमपल्ली (तमिलनाडु) आदि हैं। इस युग में मानव कृषि कर्म तथा पशुपालन आदि करने लगा और झोपड़ियों का निर्माण कर स्थायी निवास बनाने लगा। यह नवपाषाण संस्कृति का काल दक्षिण भारत में 2600 ई.पू.-1000 ई.पू. माना जाता है।

महापाषाण संस्कृति *(Megalithic Culture)*

नवपाषाण संस्कृति के पश्चात् सुदूर दक्षिण के इतिहास में जिस संस्कृति का प्रारंभ हुआ उसे महापाषाणयुगीन संस्कृति (Megalithic Culture) कहा जाता है। इस संस्कृति के लोग लौह उपकरणों का उपयोग करते थे तथा इनके पास काले एवं लाल रंग के मृद्भांड थे। इस संस्कृति के लोगों का पता हमें उनकी बस्तियों से नहीं बल्कि कब्रों से चलता है जो महापाषाण कहलाती हैं। इस संस्कृति का कालक्रम लगभग 1000 BC से 300 BC तक माना जाता है।

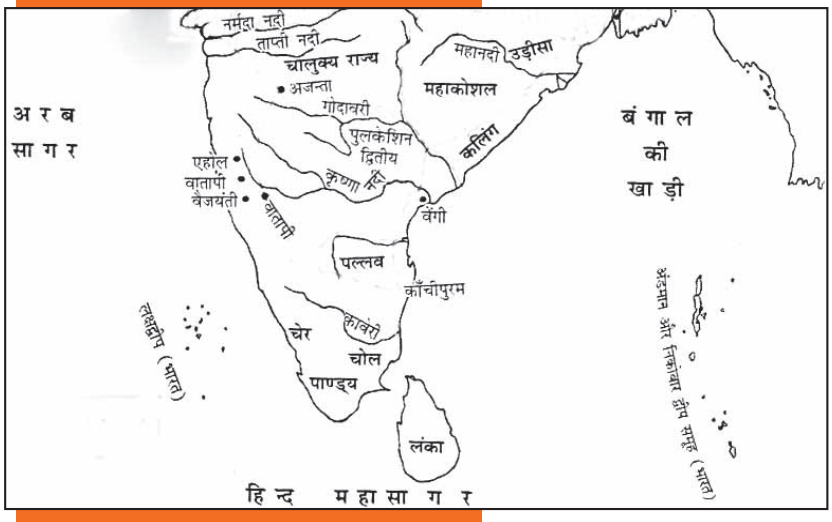

13.1 संगम युग *(Sangam Age)*

ऐतिहासिक युग के प्रारंभ में दक्षिण भारत का क्रमबद्ध इतिहास हमें जिस साहित्य से ज्ञात होता है उसे संगम साहित्य कहा जाता है। संगम का अर्थ– गोष्ठी अथवा परिषद होता है। यह तमिल कवियों तथा विद्वानों की परिषद थी। इन संगमों

अध्याय
14

प्रारंभिक भारतीय संस्कृति के प्रतिपाद्य (Predicables of Early Indian Culture)

14.1 प्राचीन भारत में भाषा एवं साहित्य का विकास
14.2 प्राचीन भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का विकास
14.3 मौर्यकाल में कला का विकास
14.4 मौर्योत्तर कला का विकास
14.5 मथुरा, गांधार एवं अमरावती कला
14.6 गुप्तकालीन कला
14.7 प्राचीन भारत में दर्शन का विकास

14.1 प्राचीन भारत में भाषा एवं साहित्य का विकास *(Evolution of Language and Literature in Ancient India)*

प्राचीन भारत के इतिहास में भाषा और साहित्य के विकास की परंपरा सिंधु सभ्यता के काल तक जाती है, किंतु उस लिपि के न पढ़े जाने की स्थिति में भाषा के स्वरूप के बारे में कुछ भी पता नहीं लग पाता। वैदिक काल से लेकर बुद्ध काल तक भाषा और साहित्य के विकास की परंपरा श्रुति परंपरा के माध्यम से प्रवाहमान रही। बुद्ध काल में जब लेखन प्रणाली का विकास हो गया तब साहित्य एवं अभिलेखों, मुद्राओं, ताड़पत्रों आदि के माध्यम से भाषा एवं साहित्य के विकास का स्पष्ट रूप से पता चलने लगता है। प्राचीन भारत में विभिन्न क्षेत्रों एवं कालों में जो भाषाएँ प्रयुक्त हुईं, वे हैं- संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश एवं तमिल भाषा। इन भाषाओं में धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष साहित्य की रचनाएँ हुईं तो दूसरी तरफ विदेशी यात्रियों ने अपनी भारत यात्रा का वर्णन अपने देश की भाषा में किया। इन्हीं विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य एवं लेखों से प्राचीन भारत के इतिहास का पुनर्निर्माण होता है।

संस्कृत भाषा एवं साहित्य का विकास *(Development of Sanskrit Language and Literature)*

भारत की ज्ञात प्राचीनतम भाषा संस्कृत है। वैदिक साहित्य की रचना इसी संस्कृत भाषा में हुई, अतः इसे वैदिक संस्कृत के नाम से जाना जाता है। इस वैदिक संस्कृत का विकास 1500 ई.पू. – 600 ई.पू. के बीच देखा जा सकता है और इस दौरान चारों वेदों, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् की रचना हुई। ब्राह्मण जहाँ वेदों की आनुष्ठानिक व्याख्या करते हैं, आरण्यक में तप पर बल दिया गया है, वहीं उपनिषद् दार्शनिक विचारों को अभिव्यक्त करते हैं।

संस्कृत भाषा एवं साहित्य के विकास का दूसरा चरण 600 ई.पू.-300 ई.पू. के काल का है। इस काल में पाणिनि ने संस्कृत भाषा को व्याकरणबद्ध किया और महत्त्वपूर्ण ग्रंथ 'अष्टाध्यायी' की रचना की। इसी काल में संस्कृत भाषा में सूत्र साहित्य की रचना हुई जिसका उद्देश्य वैदिक साहित्य को अक्षुण्ण बनाए रखना था। यास्क का 'निरुक्त' क्लासिकल संस्कृत ग्रंथ का महत्त्वपूर्ण उदाहरण है।

संस्कृत भाषा एवं साहित्य के विकास का तीसरा चरण 300 ई.पू.-300 ई. तक माना जाता है। इस काल में पाणिनी के आदर्शों पर संस्कृत भाषा और साहित्य की रचना हुई और पतंजलि ने संस्कृत व्याकरण के महत्त्वपूर्ण ग्रंथ 'महाभाष्य' की रचना की। इसके अतिरिक्त अन्य रचनाओं में सर्वप्रमुख रचना है कौटिल्य का अर्थशास्त्र, इससे मौर्यकालीन इतिहास की जानकारी तो मिलती ही है साथ ही प्राचीन भारत के राजनीतिक उच्चादर्शों का भी पता चलता है। इसी चरण में संस्कृत भाषा में महायान बौद्ध साहित्य की रचनाएँ मिलती हैं। अश्वघोष की 'बुद्धचरित' एवं 'सौंदरानंद' संस्कृत में रचित प्रमुख बौद्ध कृतियाँ हैं। इसी चरण में चतुर्थ बौद्ध संगीति हुई जिसमें अभिव्यक्ति का माध्यम संस्कृत भाषा बनी।

संस्कृत भाषा में स्मृति साहित्य की रचना हुई जिसमें 'मनुस्मृति' प्रमुख है। इसी चरण में संस्कृत भाषा के पहले बड़े अभिलेख रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख की रचना हुई।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456